International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 18-03-2022, Accepted: 04-04-2022, Published: 19-04-2022
Volume 8, Issue 2, 2022, Page No. 65-67

अलका सरावगी कृत उपन्यास 'शेष कादम्बरी' में नारी विमर्श

युगल किशोर यादव
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश, भारत

सारांश
नारी विमर्श साहित्य के माध्यम से उस विचारधारा का पर्याय है जिसके तहत नारी को वास्तविक रूप से मनुष्य के रूप में प्रतिष्ठा दिलाकर उसकी स्वतंत्रता और वाजिब अधिकारों को दिए जाने की पैरवी करता है। पितृसत्ता में नारी प्रारम्भ से ही वंचित और उपेक्षित रही है। उसकी नियति उस द्रव्य के समान रही है जिसे किसी भी पात्र में ढाल दिया जाए तो वह उसी का आकार ले लेती है। अतः नारी का अपना कुछ भी नहीं था। नारीवादी विचारधाराओं ने नारी को अपने जीवन के बारे में सोचने के लिए विवश किया। उन्हें अपनी स्वतंत्रता और अधिकारों के लिए समय–समय पर उकसाया है। अतः नारी विमर्श ने नारी समाज को वह धरातल प्रदान की है जहाँ से नारी न्याय और अपने हक की आवाज को बुलन्द कर सकें।

मूल शब्दः नारी, विमर्श, अन्याय, संघर्ष, अस्मिता, अस्तित्व

प्रस्तावना
अलका सरावगी हिंदी साहित्य जगत की एक बहुचर्चित और जाना–माना नाम है, जिनकी लोकप्रियता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि उनकी पहली उपन्यासिक कृति 'कलि–कथाः वाया बाइपास' (1998) को हिंदी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ सम्मान 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' (2001) से सम्मानित किया गया। अलका जी की रचनाओं में नारी जीवन के यथार्थ पक्षों का उद्घाटन हुआ है। स्वयं नारी होने के कारण उन्होंने स्त्री जीवन की पीड़ा को महसूस किया है। यही कारण है कि उनकी रचनाएँ नारी जीवन से जुड़े मुद्दों को वास्तविक रूप में उभार पाने में सफल हुई है। पितृसत्ता की परम्परावादी रूढ़ सामाजिक मान्यताओं एवं कुरीतियों की जकड़न से नारी मुक्ति और उसकी अस्मिता की रक्षा के लिए अलका जी समाज को कठघरे में खड़ा करती है। उन्होंने अपनी कलम से 'नारी विमर्श' को एक नया आयाम दिया है। नारी विमर्श की दृष्टि से 'शेष कादम्बरी' एक उत्कृष्ट रचना है, जो मुख्य रूप से स्त्री प्रधान उपन्यास है।
'नारी विमर्श' नारी और विमर्श दो शब्दों के योग से बना है। नारी शब्द स्त्री, औरत, महिला, कान्ता, रमणी आदि शब्द का पर्याय है, तो दूसरी ओर विमर्श का शाब्दिक अर्थ है सोच–विचार करना, तर्क–वितर्क करना, चर्चा–परिचर्चा, विवेचन–विश्लेषण तथा मीमांशा इत्यादि। अतः नारी विमर्श से तात्पर्य है नारी जीवन से जुड़े तमाम मुद्दों को केंद्र में रखकर विचार–विवेचन, मीमांशा करना। नारी जीवन से जुड़े ये मुद्दे मुख्य रूप से नारी की स्वतंत्रता, अस्तित्व, अस्मिता, अधिकार तथा समाज में उसकी स्थिति से जुड़े हुए हैं। प्रो. रोहिणी अग्रवाल नारी विमर्श को परिभाषित करते हुए लिखती है, "स्त्री को केंद्र में रखकर समाज, संस्कृति, परंपरा, इतिहास का पुनरीक्षण करते हुए स्त्री की स्थिति पर मनवीय दृष्टि से विचार करने की अनवरत प्रक्रिया।"[1] मधु कांकरीया के अनुसार "स्त्री विमर्श का पहला और सीधा मतलब है कि अपने भीतर आत्मविश्वास पैदा करना, अपने भीतर के अंधविश्वास से मुक्ति पाना, अपने भीतर के कु–संस्कारों से मुक्ति पाना। स्त्री विमर्श का मतलब पुरुषों की नकल नहीं। न ही पुरुषों की स्वछंदता को अपनाना। मेरा दृढ़ विश्वास है कि पुरुष अस्मिता, पुरुष को कुचलकर स्त्री विमर्श आगे नहीं बढ़ सकता। मैं यह मानती नहीं हूँ। जिस प्रकार जैसे कई लोग कहते हैं कि हमें पुरुष की जरूरत ही क्या है? मैं यह नहीं मानती। मैं यह मानती हूँ कि पुरुष को कुचलकर आप स्त्री अस्मिता बचा नहीं सकती। इसलिए मैं कहती हूँ कि पुरुष को उनकी सामंतवादी मानसिकता से मुक्ति पानी होगी। मतवादी मानसिकता से मुक्ति पानी होगी।"[2] इस प्रकार नारी विमर्श हाशिए में धकेल दी गई स्त्री की स्वतंत्रता और अधिकार, अस्मिता और अस्तित्व की माँग करती है। यह स्त्री जीवन की पराधीनता, असमानता, लिंग भेद, शोषण, अत्याचार, अन्याय, दमन, उपेक्षा, उत्पीड़न, हिंसा आदि पहलुओं पर खुलकर विचार करता है। साथ ही पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था की उन तमाम रूढ़ पारम्परिक मूल्यों का विरोध करती है जो नारी जीवन की दुर्दशा का एकमात्र कारण है। नारी विमर्श ने नारी के लिए एक ऐसी ज़मीन तैयार की है जहाँ पर खड़ी होकर नारी अपने जीवन के बारे में सोच सकती है, अपनी पहचान और अस्मिता का निर्माण कर सकती है। नारी विमर्श कोई पुरुष विरोधी विमर्श नहीं है, न ही समाज में कोई अलग सत्ता बनाना चहती है। यह तो बस नारी का समाज में पुरुष के समान सहभागिता चाहती है, मनुष्य रूप में अपनी पहचान चाहती है। नारी विमर्श की दृष्टि से 'शेष कादम्बरी' अलका सरावगी की एक श्रेष्ठ कृति है, जिसमें उन्होंने नारी जीवन के अनेक पहलुओं को वास्तविक रूप में उभारा है। उनका अपना निजी जीवनानुभव भी सहायक रहा है। "स्त्री जब उपन्यास लिखती है, उपन्यास में स्त्री की आवाज होती है। वह अपनी नजर से राष्ट्र, आधुनिकता और बुद्धिवाद को देखती है। स्त्री के उपन्यास में बाहरी दुनिया के अलावा स्त्री का अपना खास वैयक्तिक परिवेश और अनुभव होता है।"[3] यही कारण है कि अलका जी स्त्री के वेदनामयी जीवन के अधिक समीप पहुँच पायी है।
आधुनिक युग व्यक्ति स्वातन्त्र्य और समानता का युग है। मानव दासता की हर बेड़ियों को तोड़कर एक नयी स्वतंत्र जीवन चेतना को हासिल करना चाहता है। यह स्त्री के लिए और भी चुनौतीपूर्ण है कि व्यक्ति स्वतंत्रता के इस दौर में भी वे

पितृसत्ता की सामंती रूढ़ियों और परंपराओं में जकड़ी हुई है। पितृसत्ता समाज में पुरुष प्रभुत्व को प्रश्रय देता है। पुरुषवादी मानसिकता ने कभी भी नारी की स्वतंत्र सत्ता को स्वीकार नहीं कर पायी है। अतः एक आम स्त्री के सामने उसकी अस्मिता का प्रश्न उतना ही ज्वलंत है जितना सौ साल पहले था। शेष कादम्बरी की रूबी गुप्ता बचपन से ही अपनी अस्मिता की लड़ाई लड़ रही होती है। उनकी यह लड़ाई जीवन के अंतिम समय तक जारी रहती है। दुनिया ने न जाने उपेक्षा और तिरस्कार के कितने डंक चुभोकर रूबी के हृदय को आहत किया। वह आजीवन अपने जीवन का प्रयोजन ढूंढती रही, अपनी अस्मिता के लिए जुझती रही। "रूबी गुप्ता, तुम्हारी 'आइडेटिटी क्राइसिस' इतनी गहरी निकली कि सत्तर साल की उम्र में भी नई–नई उलझनें पैदा कर रही है।"[4] वैवाहिक जीवन की सफलता स्त्री–पुरुष के मध्य परस्पर प्रेम, सद्भावना और सामंजस्य में है। किन्तु वैवाहिक रिश्ते की बुनियाद ही यदि छल, कपट और धोखे की ईंटो से रखा जाए तो जीवन घुटन, पीड़ा, अन्याय, हिंसा का घर बन जाता है। शेष कादम्बरी की सविता और फराह का दाम्पत्य जीवन इस सत्य को उद्घाटित करती है। उनका दाम्पत्य जीवन एक समस्या बनकर रह जाती है। दाम्पत्य जीवन की मिठास, प्रेम और विश्वास की आकांक्षी नारी को जब पति द्वारा केवल उपेक्षा, प्रताड़ना और विश्वासघात मिलती है तो स्त्री का मन घोर निराशा से भर जाता है। "उसने कहा कि उसे एक–से–एक सुन्दर लड़कियों के साथ घूमने की आदत है"– सविता के होंठ दुख और क्रोध से थरथरा रहे थे–"अब आप कहिए कि कोई औरत कैसे ऐसे रह सकती है? कैसे बरदाश्त कर सकती है यह सब? सिर्फ 'सर पर एक छत' के लिए?"[5] 'सर पर एक छत के लिए' यह एक बड़ा सवाल है, नारी की विवशता और पराश्रित होने का एक करण है। "नारी स्वातन्त्र्य के लिए सबसे बड़ा बाधक आर्थिक स्वावलम्बन की समस्या है पुरुष को यह अहंकार है कि वह नारी का आश्रयदाता है। पुरुष के इस अहंभाव का खण्डन करने के लिए नारी का स्वावलम्बिनी बनना अत्यन्त आवश्यक है।"[6] 'शेष कादम्बरी' की कादम्बरी आधुनिक नारी के रूप में आशा की किरण बनकर आयी है, जो स्त्री जीवन को लेकर आत्मसजग है, वह आत्मनिर्भर है, विवाह के स्थान पर पहले कैरियर बनाने को प्राथमिकता देती है। समाज में पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलती है। बावजूद इसके वह अपनी पहचान और अस्मिता की लड़ाई लड़ रही होती है। वह आधे अंग्रेज और आधे भारतीय पिता और हिंदी भाषी माता की संतान है। वह देखने में न तो भारतीय लगती है न ही युरोपियन। उसकी स्थिति विचित्र है। जीवन में उसे कदम–कदम पर भेद–भाव सहने पड़ती है। अपनी स्थिति को उजागर करती हुई वह कहती है, "जबकि हमारी दुनिया एक टूटी–फूटी दुनिया है। एक–दो या तीन पीढ़ियों पहले हम कहीं और थे–सैकड़ों या हजारों मील दूर कुछ और तरह से खा रहे थे, कुछ और पहन रहे थे, किसी और तरह की भाषा बोल रहे थे। हम साबुत लोग नहीं हैं, नानी। हम जैसे रिफ्यूजी हैं, आप समझ रही हैं मेरी बात?"[7] आत्मनिर्भर स्त्रियों का जीवन भी चुनौतियों से भरा पड़ा है। आधुनिक विचारों को आत्मसात करने वाली नारियाँ प्रायरू आधुनिक संदर्भ में जीवन जीना चहती है। उनकी आधुनिक सोच और जीवनशैली उन्हें कहीं न कहीं पारिवारिक संबंधों से दूर ले जा रही है। तनावपूर्ण जीवन के कारण प्रायरू परिवार टूट रहे हैं और तलाक जैसी स्थिति उत्पन्न हो रही है। "यह वापस क्यों नहीं चली गई, जब इसने पति से तलाक लिया? क्या पैंसठ साल की उम्र तक पहुँचकर, जब जीवन बहुत अधिक नहीं बचा है, इसकी इच्छा नहीं होती कि अपने जैसे दिखने वाले, बोलने वाले लोगों के बीच हो?"[8] परिवार से दूर होकर स्त्रियाँ प्रायरू कुंठा, घुटन जैसे मानसिक अवसादों का शिकार हो रही है। सूनेपन और अकेलेपन की स्थिति से उत्पन्न घोर निराशा उन्हें आत्महत्या की ओर खींच रही है। नारी विमर्श की दृष्टि से यह गम्भीर चिंता का विषय है।

नारी के प्रति हो रहे अन्याय, अत्याचार, हिंसा में यौन उत्पीड़न एक गम्भीर समस्या है। शेष कादम्बरी की मायाबोस बचपन में ही अपने पिता द्वारा दैहिक (यौन) शोषण का शिकार होती है। पिता द्वारा किए गए कु–कृत्य ने उसके आत्म–सम्मान और आत्म–विश्वास को क्षीण कर दिया। मायाबोस के जीवन की परिणिति वेश्या रूप में होती है। दूसरी और सायरा अपने ही भाई द्वारा यौन उत्पीड़न को सहती हुई गर्भवती होती है। अपने सगे–संबंधियों द्वारा यौन दुराचार का शिकार होने जैसी घटनाएँ पारिवारिक माहौल में भी नारी की असुरक्षा की भावना को जन्म दे रही है तथा पारिवारिक रिश्तों की पवित्रता पर प्रश्न चिन्ह लगा रही है। "परिवार के पक्ष में सबसे सबल तर्क परिवार में मिलने वाली सुरक्षा का है, पुत्री के कौमार्य को बचाए रखने का दायित्व पिता के परिवार को माना जाता है किन्तु अधिकांश संदर्भों में परिवार में होने वाले यौनाचार, निकट संबंधियों द्वारा 'बचपन से बलात्कार' स्त्री के सम्पूर्ण जीवन को असामान्य कर देते हैं।"[9]

पुरुष सदियों से समाज की सत्ता अपने हाथों से चला रहा है। उसने स्त्री को हमेशा दोयम दर्जे का माना है। पुरुष सदैव स्त्री से यही उपेक्षा करता है कि स्त्री हमेशा पुरुष की सेवा में तत्पर रहें। "पितृक राजनीति का एकमात्र उद्देश्य है स्त्री को उसके स्वत्वाधिकारों से वंचित रखना। उसे स्वत्वहीन, अस्मिताविहीन, रीढ़विहीन, आवाज़हीन बनाकर रखना, ताकि वह कहीं रीढ़ के बल पर खड़ी होकर आत्मनिर्भर, आत्मसजग, जागरूक होकर उसके वर्चस्ववाद को चुनौती न दे डाले।"[10] नारी को समाज में पुरुष वर्चस्ववादी मानसिकता से दो–चार होना तो पड़ ही रहा है, विडम्बना तो यह है कि नारी के प्रति नारी की मानसिकता भी एक बड़ी चुनौती बनकर उभरी है। जब कभी भी समाज अथवा परिवार में नारी पर लांछने लगाकर उसे बदनाम किया जाता है अथवा उसे प्रताड़ित किया जाता है ऐसी स्थिति में नारी के पक्ष में नारी उतनी दृढ़ता से खड़ी नहीं होती, जितना एक नारी होने के नाते उसे होना चाहिए। जीवन के कई स्तरों पर नारी को ही नारी के जीवन में दुखों और कष्टों का बीज बोते हुए देखा गया है। 'शेष कादम्बरी' की सविता पति द्वारा किए गए अन्याय और धोखे की पीड़ा से उभर ही नहीं पायी थी कि सास ने उस पर जुल्म ढाना शुरु कर दिया। "उस औरत ने मेरा जीना ऐसा हराम कर डाला कि मैं दिन भर काम करती और रात भर रोती। आखिर बीमर पड़ गई। यही रीढ़ की हड्डी में दर्द। तब उन लोगों ने मेरी एड्स तक के लिए टेस्टिंग करवाई। जब उन लोगों को डॉक्टर ने कहा कि मुझे आराम की सख्त जरूरत है, तो सास ने मुझे जबर्दस्ती कलकत्ते भेजकर चौन की साँस ली।"[11] विवाह पश्चात रूबी गुप्ता भी ससुराल में सास, जेठानी और ननदों द्वारा मानसिक प्रताड़ना सहती है। "सुन बहु, हमारे घर में सब चाय पीते हैं। दूध–रस पीना हो, तो अभी बाप के घर चली जा"।[12] विवाह के दौरान मन चाहा दहेज न मिल पाने के कारण रूबी गुप्ता आजीवन उपेक्षापूर्ण व्यवहार सहने को विवश होती है। इसके अलावा रूबी गुप्ता द्वारा सविता की अस्वस्थता की स्थिति में उसकी देखभाल के दौरान निवेदिता की कही हुई बाते स्त्री की स्त्री के प्रति कमजोर मानसिकता को ही उजागर करती है, "वह अकेली है, असहाय है, पर हो सकता है कि वह तुम्हारा फायदा उठा रही हो।"[13] आज नारी का जीवन संघर्ष जिस मुकाम तक पहुँच

पायी है, वह चुनौतियों से भरा पड़ा है। ऐसे में नारी को नारी का सहभागी बनना पड़ेगा, जीवन संघर्ष में उसका साथी बनना पड़ेगा। क्योंकि नारी ने जब भी पुरानी बंधी–बंधायी परम्परावादी लीक से हटकर अपनी अलग पहचान बनानी चाही है उसे अनेक कष्ट और पीड़ा के दौर से गुजरना पड़ा है। "ऐ औरत, तूने जब भी किसी भी कोने में पुरुष से अलग अपना कुछ बनाया है, तो तुझे इसकी कीमत देनी पड़ी है।"[14]

निष्कर्षतरू 'शेष कादम्बरी' उपन्यास नारी विमर्श की दृष्टि से एक उत्कृष्ट रचना है। अलका जी ने नारी जीवन की वास्तविक घटनाओं और समस्याओं को उठाते हुए नारी के जीवन संघर्ष एवं उनके दर्दभरी दास्ताँ की अभिव्यक्ति की है। आधुनिक चेतना ने अपने साथ भले ही मानव जीवन एवं समय–समाज में अमूल–चूल परिवर्तन लाए हो, किन्तु जो चीज नहीं बदली वह है नारी जीवन की समस्याएँ। आज बदलते समय में नारी अपने जीवन में बदलव चाहती है। वह पुरुषों पर आश्रित रहना छोड़कर स्वावलंबी बनना चाहती है। वह समाज में अपनी स्वतंत्र पहचान बनाना चहती है, अपनी अस्मिता को पाना चहती है। नारी विमर्श के कारण नारी अपने अस्तित्व और अधिकारों को लेकर सचेत अवश्य हुई है। साथ ही अपने साथ हो रहे किसी भी प्रकार की हिंसा, अन्याय और भेद–भाव के खिलाफ आवाज उठाकर उसका विरोध भी रही है। अब वह दिन दूर नहीं जब स्त्री अपने वाजिब अधिकारों को हासिल कर एक मनुष्य के रूप में स्वयं की पहचान को स्थापित कर पाएँगी।

संदर्भ सूची

1. हिंदी साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि, लालचंद गुप्त मंगल, पृष्ठ–229
2. मधु कांकरिया का कथा साहित्यः स्त्री विमर्श, रंजिता रा. परब, पृष्ठ–122–123
3. हिन्दी उपन्यासरू राष्ट्र और हाशिया, शंभुनाथ, पृष्ठ–280
4. शेष कादम्बरी, सरावगी अलका, पृष्ठ–33
5. वही, पृष्ठ–70
6. घरौंदे उपन्यास में नारी के विविध रूपरू बदलते सामाजिक परिदृश्य के संदर्भ में, सिंह डॉ. सुमन, हिन्दी साहित्य में नारी अस्मिता के विविध रूप, पृष्ठ–129
7. शेष कादम्बरी, सरावगी अलका, पृष्ठ–52
8. वही, पृष्ठ–160
9. स्त्री चिन्तन की चुनौतियाँ, कस्तवार रेखा, पृष्ठ–191
10. नारीवादी विमर्श, कुमार राकेश, पृष्ठ–24–25
11. शेष कादम्बरी, सरावगी अलका, पृष्ठ–185
12. वही, पृष्ठ–76
13. वही, पृष्ठ–160
14. वही, पृष्ठ–78